दिनाँक 22 सितंबर 2016 को अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ के सभागार में 'चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व का समग्र विकास' विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। मुख्य वक्ता के रूप में श्री अतुल कोठारी (सचिव शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली) उपस्थित थे। साथ ही इस सुअवसर पर अग्रवाल विद्या प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री देवेंद्र गुप्ता जी, महाविद्यालय प्राचार्य डॉ कृष्णकांत गुप्ता, मोती लाल गुप्ता जी (साईं धाम, फरीदाबाद), एम एल गुप्ता जी (प्रयास अकादमी), आलोकदीप (हरियाणा Women Welfare Association की अध्यक्षा), डॉ सुनीता गुप्ता एवं महाविद्यालय के समस्त प्रवक्तागण उपस्थित थे।

श्री अतुल कोठारी ने ॐ के उच्चारण तथा प्राणायाम की महत्ता से अपना वक्तव्य शुरू किया। ओमकार वैज्ञानिक पध्दति है जिससे शांति मिलती है। उन्होंने उपनिषद में वर्णित पंचकोश की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि चरित्र निर्माण बाल्यवस्था से ही प्रारम्भ किया जाना चाहिए तथा अच्छी आदतें बच्चों को छोटी उम्र से ही सिखानी चाहियें। मानव जीवन में सर्वश्रेष्ठ चरित्र निर्माण है, यदि धन की हानि होती है तो वह कोई हानि नहीं है। स्वास्थ्य की हानि होती है तो वह अल्प हानि है और यदि चरित्र पतन होता है तो व्यक्ति का सब कुछ नष्ट हो जाता है। इसी सन्दर्भ में श्री कोठारी ने मानव जीवन में चरित्र निर्माण और उससे होने वाले व्यक्तित्व के विकास के बारे में विस्तार से चर्चा की। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चरित्र निर्माण और उसके द्वारा हम अपने व्यक्तित्व कैसे निखारें ? यह और अधिक आवश्यक हो गया है। विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए यह कार्यशाला आयोजित की गई। साथ ही यह भी सन्देश दिया कि हमें आध्यात्मिक विकास के लिए निस्वार्थ भाव से दान व कार्य करना चाहिए।

अग्रवाल महाविद्यालय प्राचार्य डॉ कृष्णकांत जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि चित्र की नहीं चरित्र कि पूजा करो, व्यक्ति की नहीं व्यक्तित्व की पूजा करो। महाविद्यालयों में सभी संकायों में विद्यार्थियों के लिए कक्षा वार्ताएं, सेमिनार, समूह, वाद-विवाद इत्यादि का प्रावधान है और इन

सभी के माध्यम से भी विद्यार्थियों का शिक्षा के साथ साथ सर्वांगीण विकास हो, यही उद्देश्य है। अग्रवाल महाविद्यालय में विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए समय-समय पर अनेक वार्ताएं भी आयोजित की जाती हैं।

अग्रवाल विद्या प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री देवेंद्र गुप्ता जी ने कहा कि ज्ञान से ही सच्चे चरित्र का विकास हो सकता है। देश को बचाना है तो शिक्षा ही बचाना है।

इस कार्यशाला का यह निष्कर्ष रहा कि शिक्षकों को आत्ममंथन आत्मचिंतन तथा आत्मावलोकन करते रहना चाहिए जिससे कि शिक्षकगण, विद्यार्थियों का चारित्रिक विकास सुचारू रूप से कर सकें।

मंच संचालिका श्रीमती किरण आनंद के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन हुआ।